CHAPTER 4

(क) बनारस

(ख) दिशा

PAGE 26 , प्रश्न और अभ्यास

बनारस

12:1:4:प्रश्न और अभ्यास:1

बनारस में वसंत का आगमन कैसे होता है और उसका क्या प्रभाव इस शहर पर पड़ता है?

उत्तर- हर व्यक्ति वसंत के आने की प्रतीक्षा करता है। चारों ओर वृक्षों में नए पल्लव ,कोयल की कुहू कुहू सरसों से लदे पीले खेत यही बसंत की कल्पना है। लेकिन बनारस का बसंत कुछ अलग ही होता है। केदारनाथ सिंह के शब्दों में बनारस में बसंत तूफानी ढील धक्कड़ को साथ लेके आती है। हर तरफ धुल के गुब्बार उड़ते रहते है तथा मुँह किरकिरी से भरा होता है। यह और जगहों पे बसंत से अलग रूप प्रदर्शित करता है।

12:1:4:प्रश्न और अभ्यास:2

'खाली कटोरों में वसंत का उतरना' से क्या आशय है?

उत्तर- कवि के अनुसार, एक खाली कटोरे में वसंत का आगमन एक दर्दनाक चीख का आह्वान है। दशाश्वमेघ घाट पर भारी भीड़ होती है। भिखारी भीख मांगने के लिए कहीं भी पहुँच जाते है। परन्तु वह पहुंचते पहुँचते गंगा के किनारे एक चट्टान के पास पहुँच जाते है। भिखारी के हाथ में कटोरा है और लाश के पीछे भीड़ शांत भाव से आगे बढ़ती है। भिखारी अपने कटोरे में कुछ मिल जाने की उम्मीद करता है। जब वह देखता है तो उसमे कुछ पैसे पड़े होते है जिस से उसे महसूस होता है की उसके कटोरे में बसंत आ गयी है।

12:1:4:प्रश्न और अभ्यास:3

बनारस की पूर्णता और रिक्तता को कवि ने किस प्रकार दिखाया है ?

उत्तर- कवि केदारनाथ अपने आनंदपूर्ण दिन के अलावा बनारस की परिपूर्णता को दिखाते हैं। कवि के अनुसार बनारस हर स्थिति में खुश रहता है। हर कष्ट और कष्ट के बाद भी वह हर्ष और उल्लास से भरा है। केदारनाथ जी मृत शरीर के द्वारा बनारस की रिक्तता को दर्शाते है। वह कहते है कि प्रतिदिन अनगिनत शव दाह संस्कार के लिए गंगा घाट जाते वक़्त जीवन की अंतिम यात्रा को दर्शाते है।

ये नित्यकर्म ही बनारस की रिक्तिता है। यह मृत्यु के परम सत्य का ज्ञान कराती है। जन्म की तरह मृत्यु भी जीवन का परम सत्य है।

12:1:4:प्रश्न और अभ्यास:4

बनारस में धीरे-धीरे क्या होता है? 'धीरे-धीरे' से कवि इस शहर के बारे में क्या कहना चाहता है?

उत्तर- कवि केदारनाथ सिंह के अनुसार, बनारस शहर में, धूल धीरे-धीरे उड़ती है, लोग भी धीरे-धीरे चलते हैं, मंदिरों में घंटे भी धीरे-धीरे बजते हैं और शाम भी धीरे-धीरे होती है। बनारस में सभी कार्य धीरे-धीरे होना ही यहाँ की विशेषता है। यह बनारस शहर को एक सामूहिक लय प्रदान करता है। कवि बनारस में हो रहे बदलावों को दिखाने के लिए धीरे -धीरे शब्द का प्रयोग करते है। कवि के अनुसार पुरे विश्व में तेज़ गति से परिवर्तन हो रहा है। इस परिवर्तन के कारण सारी पुरानी चीजे खोती जा रही है। इस परिवर्तन में सभी लोग शामिल हो रहे है जिस से संस्कृति और सभ्यता नष्ट हो रही है। बनारस परिवर्तन से अभी प्रभावित नहीं हुआ है। यहां भी परिवर्तन हो रहा है परन्तु धीरे-धीरे। यह अलग रंग और संस्कृति के कारण और शहरो से अलग है।

12:1:4:प्रश्न और अभ्यास:5

धीरे-धीरे होने की सामूहिक लय में क्या-क्या बँधा है?

उत्तर- बनारस शहर अपनी पुरानी सभ्यता और संस्कृति से बंधा हुआ है। धीरे धीरे की सामूहिक लय ही इसे मजबूती प्रदान करती है। यहाँ प्राचीन काल से यथास्थिति बनी हुयी है। गंगा जी को आज भी माता कहकर सम्बोधित किया जाता है तथा उनके तट पर बंधी नावें वही बंधी है जहां सदियों से बंधी आ रही है। संत कवि तुलसीदास जी की खड़ाऊँ भी अपने पूर्ववत स्थान पर सुसज्जित है। कवि का तात्पर्य यह है परिवर्तन की इस धीरे धीरे के लय के कारण बनारस मजबूत हुआ है। अपने आस-पास के परिवर्तन से बनारस अछूता है। इसी कारण यहाँ की प्राचीन परम्पराएँ, संस्कृति, मान्यताएं ,धार्मिक आस्थाएं ऐतिहासिक विरासत वैसी की वैसी है। यह शहर आधुनिकता से दूर है इसलिए अपने पुराने स्वरुप को संभाले हुए है।

12:1:4:प्रश्न और अभ्यास:6

'सई साँझ' में घुसने पर बनारस की किन-किन विशेषताओं का पता चलता है?

उत्तर- कवि के अनुसार सई –सांझ के समय यदि कोई बनारस शहर में जाता है,तो उसे निम्नलिखित विशेषताओं का पता चलता है-

(क) बनारस के मंदिरों में होने वाली अआरती आस पास के वत्वर्ण को आलोकित करती है।

(ख) आरती के दीप का प्रकाश बनारस शहर की सुन्दरता को बढाता है।

(ग) बनारस परचिंता तथा आधुनिकता का संगम है । यहाँ अभी भी प्राचीन मान्यतान्यें उपस्थित है तथा यह शहर आधुनिकता को अपना भी रहा है।

(घ) गंगा घाट पर पूजा तथा शवो का दाहसंस्कार एक साथ होता है जो जीवन के सत्य से परिचय कराता है।

12:1:4:प्रश्न और अभ्यास:7

बनारस शहर के लिए जो मानवीय क्रियाएँ इस कविता में आई हैं, उनका व्यंजनार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - बनारस शहर के लिए दो जगह मानवीय क्रियाएं अभिलिक्षित हुई है । वे इस प्रकार है-

1.इस महान और पुराने शहर की जीभ किरकिराने लगती है: इसमें व्यंजनार्थ है कि धूल भरी आंधी के कारण बनारस के गली मोहल्लों में धूल ही धूल उड़ती हुयी दिखती है। इसी कारण पूरा शहर धूल से भर जाता है। धूल भरी फर्श पे चलते वक़्त पैरों में किरकिरी लगती है।

2.अपनी एक टांग पर खड़ा है यह शहर अपनी दूसरी टांग से बिलकुल बेखबर :

इसमें व्यंजनार्थ है कि बनारस आध्यात्मिकता में इतना अधिक निहित है कि इसे उन परिवर्तनों का ज्ञान नहीं है जो बनारस के बहार चल रहे हैं। यह बस आध्यात्मिकता के रंग में रंगा हुआ है। यह दूसरे पक्ष आधुनिकता से पूरी तरह अनभिज्ञ है।

12:1:4:प्रश्न और अभ्यास:8

शिल्प-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

(क) 'यह धीरे-धीरे होना .... समूचे शहर को'

(ख) 'अगर ध्यान से देखो .... और आधा नहीं है'

(ग) 'अपनी एक टाँग पर .... बेखबर'

उत्तर -

(क) ''धीरे-धीरे ' होना में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है। कवि ने बनारस में हो रहे परिवर्तनों की गति को इसके माध्यम से व्यक्त किया है। सुस्ती को बनारस की विशेषता बताया गया है।

(ख) कवि ने बनारस की विचित्रता को इन पंक्तियों के माध्यम से दिखाया है। कवि कहते है कि बनारस में कुछ भी पूर्ण नहीं है। वह इस अधूरेपन को 'आधा' कहकर सम्बोधित करते है। इस पंक्ति में प्रतीकात्मकता का भाव स्पष्ट है तथा अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

(ग) इन पंक्तियों में कवि ने बनारस की आध्यात्मिकता का परिचय दिया है। बनारस पूरी तरह आध्यात्मिकता में डूबा है। बनारस विश्व में हो रहे परिवर्तन से अनजान है।इस पंक्ति में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है। प्रतीकात्मकता तथा लाक्ष्निकता का समावेश है**।** इस पंक्ति में 'एक तंग पे खड़े होना ' मुहावरे का प्रयोग हुआ है।

PAGE 27, दिशा

12:1:4:प्रश्न और अभ्यास:1

बच्चे का उधर-उधर कहना क्या प्रकट करता है?

उत्तर - बच्चे का उधर-उधर कहना उसकी पतंग की दिखा को प्रकट करता है। इस पंक्ति का आशय यह कि उस बच्चे को सिर्फ अपनी पतंग की दिशा का ज्ञान है। उसे यह ज्ञान नहीं है कि हिमालय किस दिशा में है। उसे सिर्फ एक दिशा का ज्ञान है वो है उसके पतंग की दिशा।

12:1:4:प्रश्न और अभ्यास:2

'मैं स्वीकार करूँ, मैंने पहली बार जाना हिमालय किधर है'- प्रस्तुत पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - इस पंक्ति के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि उसे यह ज्ञान है की हिमालय उत्तर दिशा में स्थित है। परन्तु वह उस बालक से मिलकर समझा जाता है की वो गलत है। क्योँकि उस बालक के लिए हिमालय की दिशा का महत्व नहीं है। उसके लिए उसके पतंग की दिशा सबसे महत्वपूर्ण होती है। वह अपनी पतंग को बस प् लेना चाहता है। इस पंक्ति का आशय यह है की हर व्यक्ति के सोचने का नज़रिया अलग- अलग होता है।